SHRI DATTATRAY AMBADAS MAYALOO ALIAS RAJDUTT

Shri Dattatray Ambadas Mayaloo alias Rajdutt is one of the pioneers whose work has truly taken Marathi cinema to International standards. “Films are not only for entertainment, but can also be used as a powerful tool for social message and a positive change in the society” keeping this thought in mind,he worked in the Marathi film industry like a yogi for more than 60 years.

2. Born on 21st January, 1932 in Dhamangaon in Amravati district, Shri Rajdutt completed his B.Com at Wardha in GS College of Commerce. He has been a Swayamsevak of the Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) since childhood and has completed three years of RSS training.

3. Shri Rajdutt participated in the activities of Aacharya Vinoba Bhave '(Pavanaraashram). He used to accompany Professor 'Thakurdas Bang' to serve leprosy patients in the 'Gopuri leprosy centre' near Sevagram and Baba amte's 'Anandvan Ashram'. He is a freedom fighter who participated in the Goa Liberation movement and Dadra Nagar Haveli movement. At a very young age, he bravely faced the jail term for two and half months towards his loyalty to the RSS.After his graduation, he worked as a journalist with 'Dainik Tarun Bharat Nagpur' and as an associate editor with 'Dainik Bharat Pune'. He also worked for children's magazine 'Chandoba' at Madras (Chennai). Here he met with his guru film director Raja Paranjape and assisted him for 7 years. As a guru dakshina, he took 'Raj' from his guru's name and 'Dutt' from his own name and started directing films independently from 1967.He directed more than 30 movies (Marathi and Hindi) and some of them are Madhuchandra, Devki Nandan Gopala, Shaapit, Pudhcha Paool, Ashtavinayak, Maaficha Sakshidar, Anjaam, Doorie, Sarja etc.

4. Shri Rajdutt has directed many serials, telefilms, documentaries like Gotya, Vinayak Damodar Savarkar, Rajgadh, Durga Bhagwat, Dr. Punjabrao Deshmukh and many more. He has worked as a jury member for subsidy committee and has contributed significantly for 'Jagtik Marathi Parishad'. He also directed a splendid light and sound stage show 'Ananda vanabhuvani'. He has been Adhyaksh of Sanskar Bharti for 10 years which is a cultural branch of RSS. At the age of 92, he is still following his passion and has started with his second innings of 'Acting' in cinemas.

5. Shri Rajdutt won three 'National awards' for best feature film in Marathi- Shapit 1982; Pudhcha Paool 1985 and Sarja 1987. Along with 3 national awards, he has won 13 Maharashtra State film awards, Filmfare Award for Shapit, Y. Shantaram Puraskar, Zee Gaurav Lifetime Achievement award, Navratna award, Rajkamal Kala Mandir V. Shantaram Puraskar, Raja Paranjpe Pratishthan Puraskar, G.D. Madgulkar and many more awards. The Russian Council felicitated Raj dutt for Shapit. His 3 films got selected in Tashkent, Venice and Cork festivals and he has been one of the Jury members of' National film awards' twice.

श्री दत्तात्रेय अंबादास मायाळू उर्फ़ राजदत्त

श्री दत्तात्रेय अंबादास मायाळू उर्फ़ राजदत्त उन अग्रणी व्यक्तियों में से हैं जिनके काम ने वास्तव में मराठी सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचा दिया है। "फिल्में न केवल मनोरंजन के लिए हैं, बल्कि इनका प्रयोग सामाजिक संदेश और समाज में सकारात्मक बदलाव के एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में भी किया जा सकता है" इस विचार को ध्यान में रखते हुए उन्होंने 60 वर्षों से अधिक समय तक एक योगी की तरह मराठी फिल्म उद्योग में काम किया।

2. 21 जनवरी, 1932 को अमरावती जिले के धामनगांव में जन्मे श्री राजदत्त ने वर्धा के जीएस कॉलेज ऑफ कॉमर्स से बी. कॉम की पढ़ाई पूरी की। वह बचपन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के स्वयंसेवक रहे हैं और उन्होंने तीन वर्ष का आरएसएस प्रशिक्षण पूरा किया है।

3. श्री राजदत्त ने आचार्य विनोबा भावे (पवनार आश्रम) की गतिविधियों में भाग लिया। वह प्रोफेसर 'ठाकुरदास बंग' के साथ कुष्ठ रोगियों की सेवा के लिए सेवाग्राम के पास 'गोपुरी कुष्ठ केंद्र' और बाबा आमटे के 'आनंदवन आश्रम' में जाया करते थे। वह एक स्वतंत्रता सेनानी हैं जिन्होंने गोवा मुक्ति आंदोलन और दादरा नागर हवेली आंदोलन में भाग लिया था। बहुत कम उम्र में, उन्होंने आरएसएस के प्रति अपनी निष्ठा के लिए ढाई महीने साहसपूर्ण ढंग से कारावास में बिताए। स्नातक स्तर की पढ़ाई के बाद, उन्होंने 'दैनिक तरुण भारत नागपुर' में एक पत्रकार के रूप में और 'दैनिक भारत पुणे' में एक सहयोगी संपादक के रूप में काम किया। उन्होंने मद्रास (चेन्नै) में बच्चों की पत्रिका 'चंदोबा' के लिए भी काम किया। यहां उनकी मुलाकात अपने गुरु फिल्म निर्देशक राजा परांजपे से हुई और उन्होंने 7 वर्षों तक उनके सहायक के तौर पर कार्य किया। गुरु दक्षिणा के रूप में, उन्होंने अपने गुरु के नाम से 'राज' और अपने नाम से 'दत्त' लिया और 1967 से स्वतंत्र रूप से फिल्मों का निर्देशन करना शुरू कर दिया। उन्होंने 30 से अधिक फिल्मों (मराठी और हिंदी) का निर्देशन किया और उनमें से कुछ हैं मधुचंद्र, देवकी नंदन गोपाला, शापित, पुधचा पाओल, अष्टविनायक, माफिचा साक्षीदार, अंजाम, दूरी, सरजा आदि।

4. श्री राजदत्त ने कई धारावाहिकों, टेलीफिल्मों, गोट्या, विनायक दामोदर सावरकर, राजगढ़, दुर्गा भागवत, डॉ पंजाबराव देशमुख और कई अन्य वृत्तचित्रों का निर्देशन किया है। उन्होंने सब्सिडी समिति के लिए जूरी सदस्य के रूप में काम किया है और 'जगतिक मराठी परिषद' के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने एक शानदार लाइट और साउंड स्टेज शो 'आनंद वन भुवानी' का निर्देशन भी किया। वह 10 वर्षों तक संस्कार भारती के अध्यक्ष रहे हैं जो आरएसएस की एक सांस्कृतिक शाखा है। 92 साल की उम्र में भी वह अपने जुनून को पूरा कर रहे हैं और सिनेमा में 'अभिनय' की दूसरी पारी शुरू कर चुके हैं।

5. श्री राजदत्त ने मराठी में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म – शापित (1982); पुधचा पाओल (1985) और सरजा (1987) के लिए तीन 'राष्ट्रीय पुरस्कार' जीते। तीन राष्ट्रीय पुरस्कारों के साथ–साथ, उन्होंने 13 महाराष्ट्र राज्य फिल्म पुरस्कार, शापित के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार, वाई. शांताराम पुरस्कार, ज़ी गौरव लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार, नवरत्न पुरस्कार, राजकमल कला मंदिर वी.शांताराम पुरस्कार, राजा परांजपे प्रतिष्ठान पुरस्कार, जी.डी.मडगुलकर और कई अन्य पुरस्कार प्राप्त किए हैं। रशियन काउंसिल ने शापित के लिए राज दत्त को सम्मानित किया। उनकी तीन फिल्में ताशकंद, वेनिस और कॉर्क उत्सवों में चुनी गईं और वह दो बार 'राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार' के जूरी सदस्यों में शामिल रहे।